

कविता में आज भी होता है 'अज्ञ'

दैनिक समाज जागरण

मुझे अपने पत्रकार होने पर जितना गर्व आज नहीं है जितना को कवि होने पर है, हालाँकि मैं रजस्टर्ड कवि नहीं हूँ। बिहार के राज्यसभा सासद मनोज झा ने राज्यसभा में नारी शक्ति बद्दल विषेषक पर बहस कि दौरान ओमप्रकाश बाल्मीकी की कविता पढ़कर जो कमाया है उसे देखकर मुझे एक बार फिर महसूस हो रहा है कि कविता का 'अम्ल' अभी कायम है। फिर कविता चाहे ओमप्रकाश बाल्मीकी लिखें या असंग घोषणा करें अचल। कविता आज भी अपना काम करती है और वो काम करती है जो किसी बद्दल विषेषक से नहीं हो सकता।

दूसरे अपने पत्रकार होने की अकल जैसी है जो दिमाग में रखने के बजाय घटनों में रहती है। इसलिए मैं भी मनोज झा ने राज्यसभा में 'ठाकुर' कविता पढ़ी तब कहीं कई प्रतिक्रिया नहीं हुई। कविता पार प्रतिक्रिया अनें में कई दिन लगे। प्रतिक्रिया आदी जब अकल घुसने से निकलकर दिमाग तक पहुँची। आज हालत ये है कि कविता बाल्मीकी साथब की अकल जैसी है जो दिमाग में रखने के बजाय घटनों में रहती है।

निकलकर दिमाग में रखने के बजाय घटनों में है मनोज झा की। झा साथब की पीछे पूरी ओरजेडी खड़ी है, मेरा मानन है कि अब मामला सिर्फ आरजेडी और भाजपा का नहीं है। झा के पीछे एक कवि के नाते मैं भी खड़ा हूँ और मुझे उम्मीद है कि झा के पीछे देश का हर कवि खड़ा होगा चाहे वो किसी भी भाषा का हो। मैं डॉ मनोज झा को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि वे अकेले नहीं हैं और उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए किसी फौज-फाट की जरूरत नहीं पड़ेगी।

दुनिया जानती है कविता की ताकत को। न जानती हो तो आज जान ले। अमुकाल में जान ले कि यदि आपके पास कविता है तो आप अकेले नहीं है। कविता आदी को अकेला रहने भी नहीं देती। कविता में अम्ल और छार दोनों होता है। कविता तलवार से भी ज्यादा धारदार और मारक होती है।

कविता लाल मिर्ज से भी ज्यादा तीखी होती है। जो कविता को पचा लेता है उसका हाजमा ठीक हो जाता है और जो नहीं पचा पाता वो सी-सी करता फिरता है बाहुबली आनंद मोहन और चेतन आनंद की तरह। मेरे गुरुतुल्य कवियों प्रो प्रकाश दीक्षित कहते थे कि - कविता लिखना इतना आसान नहीं, जिनना की सुवध-सुवध सूरज का उगाना, कविता को लिखना होती है मैं जो आपको उकेरने की। भाजपा को पास यदि स्पेश बिधूड़ी हैं तो वे संयोग है कि आरजेडी के पास डॉ मनोज झा जैसे संसद हैं। झा बिना गान्धी बचपन के भी अपनी बात खड़ी है वो उनकी लिखियाँ नहीं हैं। कविता उत्तरप्रदेश के बरला गांव मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) के उन मप्रकाश बाल्मीकी की है जो एस दुनिया में नहीं है। ओमप्रकाश बाल्मीकी नाम के ही नहीं बल्कि जन्म से भी बाल्मीकि थे। आज जब वे होते तो पूरे 73 साल के होते और बहुत युश्य होते अपनी कविता की मार को देखकर। ये तो अच्छा है कि भाजपा के नरसिंहों को ज्यादा पढ़ना-लिखना नहीं आता अन्यथा वे ओमप्रकाश बाल्मीकी की

भाजपा को पास यदि स्पेश बिधूड़ी हैं तो वे संयोग है कि आरजेडी के पास डॉ मनोज झा जैसे संसद हैं। उन्होंने जान लेने की साथ गहरा घड़यंत्र होता रहा लेकिन मूर्ख हिंदू विश्वास की गगरी होता रहा। पारसनेता सोफे पर एक पैर चढ़ाते हुए।

जैसी अमर कविता लिखने वाले रामधारी सिंह दिनकर बिहार की धरती के ही सूपत थे। व्या आनंद मोहन और उनकी जैसे लोग दिनकर की जबाब भी खींच लेते ? दिनकर ने तो सीना ठोककर लिखा था कि -

'अंधा चक्रार्थी का मारा, क्या जाने इतिहास बेचारा, साखी हैं उनकी महिमा के, सूर्य चन्द्र भूमोल खगोल,

बिहार कि ठाकुरों को ही नहीं पूरे देश कि शोषक वर्ष को बहले इतिहास पढ़ना चाहिए। फिर धमकियां देने कि वारे में सोचना चाहिये। उन्होंने जान लेना चाहिए कि जिसी जाती को इंगित नहीं करते।

ओमप्रकाश बाल्मीकी की कविता यदि ठाकुरों को जीतन कर लिखी गयी है तो बिहार में तो कपूरी ठाकुर भी होते हैं। व्या ये कविता कपूरी की जाती को निशाने पर रखकर लिखी गयी होगी। मुझे भाजपा पर, उसके सांसदों पर उस्सा बिलकुल नहीं आता, द्या आती है क्योंकि उनके पास न तो भाजपा कि पिंत-पुरुष अटल बिहारी बाजपेयी की तरह भाषा का लालिल है और न साहित्य का ज्ञान। वे बेचारे कविता की ताकत को क्या समझें। उन्हें वाले भाजपा में हमेशा से पुरस्कृत किये जाते हैं।

डॉ मनोज झा को जिस कविता को सुनाने के बाद जान से मारने की इधर की धरकत नहीं है, वो उनकी लिखियाँ नहीं हैं। कविता उत्तरप्रदेश के बरला गांव मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) के उन मप्रकाश बाल्मीकी की है जो एस दुनिया में नहीं है। ओमप्रकाश बाल्मीकी नाम के ही नहीं बल्कि जन्म से भी बाल्मीकि थे। आज जब वे होते तो पूरे 73 साल के होते और बहुत युश्य होते अपनी कविता की मार को देखकर। ये तो अच्छा है कि भाजपा के नरसिंहों को ज्यादा पढ़ना-लिखना नहीं आता अन्यथा वे ओमप्रकाश बाल्मीकी की

@ राकेश अचल

बसंत बहार हो तुम

मेरी जिंदगी का सबसे हसीन इक्फाक हो तुम।

जो पूरा ना हो सका कभी वो अधूरा ख्वाब हो तुम।

जो महका जाती है मेरी साँसों को वो मीठा से एहसास हो तुम।

बहुत दूर हो तुम मुझसे फिर भी मेरी धड़कनों के पास हो तुम।

जो सुनाई देती है हर वक्र मुझे मेरे दिल की बो खामोश आवाज हो तुम।

पतझड़ में भी जो महक जाती है मुझे मेरे लिये वो बसन्त बहार हो तुम।

एक पल के लिए भी नहीं भूल सकते तुम्हें मेरे लिये जिंदगी में सबसे खास हो तुम।

यही सोच और ये ही विचार लेखनीबद्ध हो कवि की कृति में, आदित्य समाज सुधार हेतु निरंतर मिलते रहते हैं।

कर्नल आदि शंकर भिंग्र, आदित्य लखनऊ

जब दूसरों से की गयी

हासी उम्मीद न पूरी हो, तो इसनां द्वारा की स्वभाव है, कि वह दुखी हो जाता है।

पर स्वयं से की गई उम्मीदों के

पूरी होने से, वा न भी पूरी होने से खुद के उसकांश की विवरण होती है।

इस देश के साहित्य पर भी हमता है।

सांसद पर भी हमता है और उनकी जाती की धरती को जीतने की विश्वास होती है।

इसलिए आदि मनोज झा का साथ दीजिये।

कविता का साथ दीजिये।

जीवन के सिद्धांत

सबका जीवन अपनी ही,

पसंद का कायल होता है,

अवसर बादिता का जीवन

मिथ्या जीवन कहलाता है।

जीवन के परिवर्तन से चेढ़ा से हों,

बहने वाली से करना ठीक नहीं,

प्रेरणा का अति महत्व है जीवन में,

हेराफेरी से छल करना ठीक नहीं।

खुद उपयोगी होना बहेतर है,

पर इस्तेमाल होना ठीक नहीं,

सर्वतों बना तो उत्तम है,

अनुचित स्पर्धा करना ठीक नहीं।

अंतर्मन की सुनवाई तो उत्तम है,

दूसरों की चर में बहना ठीक नहीं;

आत्म सम्मान जीवन में उत्तम है,

स्वयं पर तरस दिखाये ठीक नहीं।

जीवन की सुनवाई तो उत्तम है,

दूसरों की चर में बहना ठीक नहीं;

आत्म सम्मान जीवन में उत्तम है,

स्वयं पर तरस दिखाये ठीक नहीं।

जीवन में कभी भी दूसरों

से उम्मीदें रखने के बजाय,

अपनी उम्मीदों पर निर्भर

रहना ही अच्छा होता है।

जीवन में कभी भी दूसरों

से उम्मीदें रखने के बजाय,

अपनी उम्मीदों पर निर्भर

रहना ही अच्छा होता है।

जीवन में कभी भी दूसरों

से उम्मीदें रखने के बजाय,

अपनी उम्मीदों पर निर्भर

रहना ही अच्छा होता है।

जीवन में कभी भी दूसरों

से उम्मीदें रखने के बजाय,

